दैनिक भास्कर
अजमेर 19-05-2022

जीरा निर्यात में स्वच्छता तथा सुरक्षित गुणवत्ता के लिए प्रशिक्षण शुरू

बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र में आयोजन

सिटी रिपोर्टर | अजमेर

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी में भारत में मसाला मूल्य श्रृंखला सशक्तीकरण के लिए जीरा व सौंफ में अच्छी एवं स्वच्छ कृषि क्रियाओं का प्रशिक्षण बुधवार को शुरू हुआ। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में राजस्थान व गुजरात से आए मास्टर ट्रेनर भाग ले रहे हैं। केंद्र के निदेशक डॉ. एसएन सक्सेना ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में जीरा के निर्यात में भारत का प्रमुख स्थान है। देश से करीब 4 हजार करोड़ रुपए का जीरा निर्यात होता है। इसमें से आधा यानी करीब 2 हजार करोड़ रुपए का जीरा अकेला चीन खरीदता है। लेकिन कुछ समय पूर्व ही चीन ने जीरा और अन्य मसाला फसलों के आयात को लेकर कुछ नए मापदंड तय किए हैं। इन मापदंडों पर खरा उतरने वाले जीरे को ही चीन खरीदेगा। इसमें मुख्य रूप से जीरा कीटनाशक रहित होना आवश्यक है। चीन के नए नियमों को भारत सरकार ने चुनौती के रूप में लिया है। निर्यात के नए नियमों और मापदंडों के अनुरूप ही किसानों को जीरा बुवाई से लेकर प्रोडक्शन और प्रसंस्करण तक की प्रक्रिया को समझाने के लिए यह मास्टर ट्रेनर प्रोग्राम आयोजित किया है। ये ट्रेनर अपने-अपने क्षेत्रों में पहुंच कर अन्य ट्रेनर और किसानों को प्रशिक्षित कर सकेंगे।

यह कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र संघ के एफएओ के एसटीडीएफ कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है। डॉ. सक्सेना ने बताया कि एग्रीकल्चर एंड प्रोसीड फूड प्रोडक्ट एक्सपोर्ट डवलपमेंट ऑथोरिटी(मिनिस्टरी ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री भारत सरकार) के बोर्ड मेंबर भागीरथ चौधरी, क्षेत्रीय मसाला बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. एम.वाई. होन्नूर और खाद्य एवं कृषि संगठन के प्रतिनिधि डॉ. कोंडा रेड्डी ने भी संबोधित किया। रेड्डी ने भारतीय मसालों के ग्लोबल व्यापार पर प्रकाश डाला तथा मसाला निर्यात में स्वच्छता तथा सुरक्षित गुणवत्ता को रेखांकित किया। डॉ. विनय सिंह ने मसालों में साल्मोनेला जीवाणु तथा अफलाटाक्सिन के कारण निर्यात पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। मसाला बोर्ड अनुसंधान निदेशक डॉ. रेमा श्री एवं अन्य वैज्ञानिक ऑनलाइन जुड़े। दो प्रशिक्षण मैनुअल का भी विमोचन किया गया।

दैनिक भास्कर अजमेर 18-05-2022

जीरा, सौंफ की उत्तम कृषि के लिए प्रशिक्षण आज से

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र में तीन दिन तक चलेगा प्रशिक्षण

अजमेर | राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र तबीजी में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के तहत मानक और व्यापार सुविधा (एसटीडीएफ) के अंतर्गत तीन दिवसीय मास्टर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम बुधवार से शुरू होगा। इस प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों तक बीजीय मसाला उत्पादन की नवीनतम उत्पादन तकनीकों के साथ-साथ उनमें गुणवत्ता पूर्ण तथा सुरक्षित उत्पादन के तौर-तरीकों तथा स्वच्छता संबंधी जानकारी दी जाएगी।

संस्थान के निदेशक एसएन सक्सेना ने बताया कि भारत में मसालों के मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने और क्षमता निर्माण एवं अभिनव तरीकों से बाजार पहुंच में सुधार करने के लिए खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के निर्देशन में मसाला बोर्ड, भारत सरकार द्वारा यह प्रशिक्षण प्रायोजित किया गया है। भारत विशेषकर राजस्थान और गुजरात से जीरा और सौंफ की उच्च गुणवत्ता युक्त सुरक्षित उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्पादन के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।

इसलिए जरूरी है यह प्रशिक्षण

डॉ. सक्सेना ने बताया कि जीरा और सौंफ की विश्व बाजार में बढ़ती मांग के साथ निर्यात में कठिनाइयां भी आ रही हैं। जैसे कीटनाशकों की अवशेष मात्रा, सूक्ष्म जीव संक्रमण, अफलाटाक्सिन तथा अन्य हानिकारक तत्वों की मिलावट आदि के बारे में जानकारी दी जाएगी।

ये लेंगे भाग

पीआरओ जीके त्रिपाठी ने बताया कि इस कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालयों, मसाला प्रसंस्करण ईकाई एवं मसाला बोर्ड के वैज्ञानिक एवं अधिकारी भाग लेगें। एफएओ, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ प्रशिक्षण देंगे।

कार्यालय जिला पुलिस अधीक्षक, अजमेर

क्रमांक : म-8(2)अजम/लेखा/पेंशन/22/223 दिनांक : 16.05.2022

विज्ञप्ति

राज्य सरकार द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक 30.10.2017 (वेतन कटौती आदेश) को (4-14) 1 एफ डी/रूल्स 2013 दिनांक 30.10.2017 (04-14 (8) एफ डी रूल्स 2012 दिनांक 10.11.2022) को विडों करते हुए कटौति राशि के भुगतान हेतु आदेश जारी कर दिए गए है। कार्यालय जिला पुलिस अधीक्षक, अजमेर में गत 03 वर्षों से जो पुलिस कर्मी सेवानिवृत्त हुए हैं, जिनकी ग्रेच्युटी राश में से कटोती कर पेंशन प्रकरण का निस्तारण किया गया था, वे कर्मचारी अपना प्रार्थना पत्र इस कार्यालय में प्रस्तुत करे ताकि उनकी कटोती की गई राशि को पुनः दिलवाने की कार्यवाही की जा सके।

जिला पुलिस अधीक्षक
अजमेर

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग, नगर खण्ड I उ.वि.रा. जोधपुर

दूरभाषः 0291-2651710, ई-मेलः eecity1@gmail.com

क्रमांक : 481-495 दिनांक: 12.05.2022

-: निविदा सूचना संख्या 25 से 29/ 2022-23 :-

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु जन स्वा. अभि. विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत विभागों/संगठनों, में उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत अनुबन्धकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया द्वारा ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित राशि (लाखों में)	धरोहर राशि रु. (लाखों में)	निविदा शुल्क/ प्रोसेसिंग फीस	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6
1	निविदा सं. 25/2022-23 दर संविदा के आधार पर नगर उपखण्ड प्रतापनगर के अधीन 200 एमएम डीटीएच/ कॉम्बीनेशन रिग द्वारा नलकूलप वैधन/ कमीशनिंग मय 03 वर्ष का संचालन व संधारण का कार्य। NIB Code **PHE2223A0941** and UBN is: **PHE2223WSRC02025**	120.00	2% = 2.40 0.5% = 0.60	2000/- + RISL 1000/-	12 माह
2	निविदा सं. 26/2022-23 दर संविदा के	120.00	2% = 2.40	2000/- +	12 माह

दैनिक भास्कर अजमेर 19-05-2022

किसानों के लिए दुविधा • प्रदेश के किसानों को जीरे की जांच के लिए सालाना 2 करोड़ 80 लाख रुपए करना पड़ते हैं खर्च

राज्य में पेस्टिसाइड टेस्टिंग लैब नहीं, जीरे की जांच के लिए गुंटूर, बैंगलुरू या हैदराबाद भेजते हैं सैंपल

आरिफ कुरैशी | अजमेर

राजस्थान के जीरा उत्पादक किसानों को जीरा की पेस्टिसाइड टेस्टिंग की लैब राजस्थान में नहीं होने पर सैंपल जांच के लिए गुंटूर, बैंगलोर और हैदराबाद की प्राइवेट लैबों में भेजना पड़ रहा है। जीरे के एक सैंपल की जांच पर करीब 8 हजार रुपए का खर्चा आ रहा है। हर साल राजस्थान से करीब साढ़े तीन हजार सैंपल भेजे जा रहे हैं। करीब 2 करोड़ 80 लाख रुपए का खर्चा किसानों को उठाना पड़ता है। यह खुलासा राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र में जीरे और सौंफ को लेकर बुधवार से शुरू हुए ट्रेनिंग प्रोग्राम में हुआ। बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. एसएन सक्सेना ने जानकारी दी कि पश्चिमी राजस्थान में जीरा किसानों को कीटनाशक रहित खेती के लिए प्रशिक्षण देने और उपज वृद्धि के गुर सिखाने का कार्य साउथ एशिया बायो टेक्नोलॉजी सेंटर के साथ किया जा रहा है। पश्चिमी राजस्थान में बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, जालौर और पाली जीरे के बड़े उत्पादक जिले हैं। इन जिलों के साथ ही अजमेर में भी जीरे का उत्पादन किसान कर रहे हैं।

डॉ. एसएन सक्सेना।

विदेशों में जीरे की मांग, खेत से ही खरीद रही हैं कंपनियां

एग्रीकल्चर एंड प्रोसीड फूड प्रोडक्ट एक्सपोर्ट डवलपमेंट ऑथोरिटी के बोर्ड मेंबर भागीरथ चौधरी के मुताबिक राजस्थान में करीब 6 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में जीरे की खेती होती है। हर साल करीब 4.5 लाख टन जीरे का उत्पादन होता है। बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर में जीरा की उच्च क्वालिटी को देखते हुए आईटीसी, मेकॉर्मिक, नेड स्पाइस, एसआरके, रेपिड ऑर्गेनिक और पी जेएम कंपनियां खेतों से ही जीरे के सेंपल लेते हैं। ये सैंपल टेस्टिंग के लिए नेशनल एक्रीडेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड केलिब्रेशन लेबोरेट्री (एनएबीएल) हैदराबाद, बैंगलोर और गुंटूर की प्राइवेट लैबों में को भेजे जाते हैं।

भागीरथ चौधरी।

साल में करीब 3.5 हजार सैंपल | हर साल करीब 3 हजार 500 सैंपल देश के तीनों शहरों की प्रमुख प्राइवेट लैब में जाता है। जांच रिपोर्ट आने में ही 10 दिन का समय लग जाता है।

अजमेर में खुल सकती है लैब | भागीरथ चौधरी का सुझाव है कि बीजीय मसालों पर रिसर्च का सबसे बड़ा शोध संस्थान भारत सरकार का अजमेर के तबीजी में स्थित राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र है। इस केंद्र पर भारत सरकार ही लैब की स्थापना कर सकती है। लैब के लिए आवश्यक संसाधनों के साथ ही कृषि वैज्ञानिकों की एक पूरी टीम यहां मौजूद है। अजमेर में लैब खुल जाने पर समय बचत के साथ ही आर्थिक बचत भी हो सकेगी।

जीरा की लैब टेस्टिंग इसलिए जरूरी | लैब में जीरे में उपलब्ध क्वालिटी और कीटनाशकों की अनुपस्थिति या न्यूनतम उपस्थिति आदि का प्रतिशत जांचा जाता है। लैब से मिलने वाले प्रमाण पत्र के आधार पर ही मल्टी नेशनल कंपनियां प्रीमियम प्राइस पर जीरा खरीद करती हैं। प्रमाण पत्र आने के बाद कंपनियां खेत से ही जीरा उठा लेती हैं।

अजमेर में लैब खुलने पर फायदा-

- सब्सिडाइड रेट पर सैंपल की जांच हो सकेगी।
- सेंपलिंग से रिपोर्ट आने तक का समय 10 दिन से घट कर आधा रह सकता है।
- टेस्टिंग से लोकल इंडस्ट्रीज को सीधा माल पहुंचाने में मदद मिलेगी।